www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-4* *April 2025***

बीसवीं सदी के कहानी आन्दोलन

डॉ0 अर्चना

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, सुकरौली, कुशीनगर

कहानी एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही कहानिकार का उद्देश्य होता है।''[1]

–प्रेमचंद

साहित्य समाज का दर्पण है। अतः समाज में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य पर स्वाभाविक रूप से पड़ता है। लेखक समाज से ही प्रेरणा पाता है। जागरूक साहित्यकार समाज में होने वाली हलचलो और गतिविधियों पर न केवल पैनी निगाह रखता है, बल्कि उन्हें अपनी रचनाओं में किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त भी करता है। इससे साहित्य में नयी चेतना का प्रसार होता है। काव्य में सृजनाएँ तो 1000 ई. से ही हिंदी साहित्य में शुरू हो जाती हैं, लेकिन कहानी कला के पूर्ण विकास (खड़ी बोली में) में 900 वर्षों का समय लग जाता है। कहानी के माध्यम से मनुष्य ने अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति दी और समाज के साथ आत्मीयता स्थापित की।

कहानी का प्राचीन स्वरूप–

संस्कृत में कहानी के लिए गल्प या आख्यायिका शब्द मिलता है। पाश्चात्य साहित्य में इसे श्शॉर्ट स्टोरीश कहा जाता है। पश्चिम में कहानी कला का उद्भव सर्वप्रथम अमेरिका में एडगर एलन पो (1809–1849 ई.) द्वारा हुआ। एडलर एलन पो ने कहानी की परिभाषा देते हुए कहा है, छोटी कहानी एक ऐसा व्याख्यान है, जो इतना छोटा हो कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया हो।

हिंदी कहानी का विकास–

हिंदी कहानी का विकास द्विवेदी युग की पत्रिका सरस्वती के प्रकाशन से प्रारंभ होता है। यद्यपि इसके पूर्व भी कुछ कहानियाँ लिखी गई थीं, जिनमें इशा अल्लाह ख़ाँ द्वारा रचित रानी केतकी की कहानी, राजा शिवप्रसाद सिंह द्वारा राजा भोज का सपना, और किशोरी लाल गोस्वामी की इंदुमती प्रमुख हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इंदुमती को ही हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी माना है, परंतु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह शेक्सपियर के टेंपेस्ट का अनुवाद है, अतः इसे मौलिक कहानी नहीं कहा जा सकता। इसलिए 1903 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित रामचंद्र शुक्ल की कहानी ग्यारह वर्ष का समय को ही हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी स्वीकार किया गया।

कहानी कला का विकास क्रम–

कहानी कला के विकास क्रम में बंग महिला की दुलाई वाली, माधवराव सप्रे की एक टोकरी भर मिट्टी, लाला भगवानदीन की प्लेग की चुड़ैल, विशंभरनाथ कौशिक की रक्षाबंधन, और चंद्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था, सुखमय जीवन, बुद्ध का कांटा प्रमुख कहानियाँ हैं। प्रेमचंद्र की कहानियों में पंच परमेश्वर, ईदगाह, पूस की रात और कफन जैसी रचनाएँ हिंदी साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। प्रेमचंद्र युग के प्रमुख लेखक सुदर्शन, प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, जैनेन्द्र कुमार, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' और यशपाल हैं। स्वतंत्रता–पूर्व और स्वतंत्रता–परवर्ती कहानियों में निर्मल वर्मा, अज्ञेय, राजेंद्र यादव, इलाचंद्र जोशी आदि प्रमुख कहानीकार हुए। इन कहानियों में सामाजिक समस्याएँ– दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, नैतिक रूढ़ियों के प्रति रोष, वर्ग संघर्ष, और शोषण मुख्य रूप से

विषय बनाए गए। डॉ0 रजनीश कुमार के अनुसार कहानी के विकास क्षितिज पर अनेक आन्दोलनों का उदय हुआ जिनमें प्रमुख आन्दोलन इस प्रकार है–

प्रथम उन्मेष–

1. नयी कहानी

द्वितीय उन्मेष–

2. अकहानी
3. सचेतन कहानी
4. सहज कहानी

तृतीय उन्मेष–

5. समानांतर कहानी

चतुर्थ उन्मेष–

6. जनवादी कहानी
7. सक्रिय कहानी

एक तरह से कथा आन्दोलन में दो दिशाओं में प्रयोग किए गए–

1. प्राचीन से अलग करना।
2. नई जमीन को तोड़ना।

नयी कहानी आन्दोलन हिन्दी कहानी आन्दोलन का प्रथम आन्दोलन है, जिसने अपने समय के अधिकतर रचनाकारों को प्रभावित किया। नयी कहानी का शुभारंभ राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर और मोहन राकेश को सम्मिलित रूप से दिया जाता है। नयीं कहानी का समय मूल्य विचलन, मोहभंग की स्थिति, अकेलेपन व अजनबीपन का एहसास, जीवनादर्शों की अनिश्चितता, जीवन के जटिल व व्यापक यथार्थ की अभिव्यक्ति है। नयी कहानी की प्रमुख कहानियों में उषा प्रियंबदा की वापसी, राजेन्द्र यादव की छूटना, कमलेश्वर की राजा निरबंसिया, मोहन राकेश की श्एक और जिंदगी, मार्कण्डेय कृत हंसा जाइ अकेला आदि प्रमुख कहानियाँ हैं। नामवर सिंह लिखते हैं कि हिन्दी कविता की अपेक्षा कहानी में स्वस्थ सामाजिक शक्ति कहीं अधिक है और आज उपन्यास की तरह कहानी सामाजिक परिवर्तन के लिए जोरदार साहित्यिक शस्त्र का काम कर रही है।"[2]

अकहानी आन्दोलन की शुरुआत गंगाप्रसाद विकल ने की। अकहानी आन्दोलन में जीवन मूल्यों का तिरस्कार, परंपरा का पूर्ण नकार, अतिशय आधुनिकता, यौन–उन्मुक्तता प्रमुख हैं। अकहानी की प्रमुख कहानियाँ गंगा प्रसाद विकल की अनविह्न, दूधनाथ सिंह की रीछ, रवीन्द्र कालिया की नौ साल छोटी पत्नी आदि प्रमुख हैं। डॉ0 गंगाप्रसाद विमल के शब्दों में अकहानी कथा के स्वीकृत आधारों का विशेष तथा किसी भी तरह के मूल्य स्थापना का अस्वीकार है। यह कहानी सभी वर्गीकरणों, मूल्याकंन के आधारों और पूर्व समीक्षाओं को अस्वीकार करती है। अकहानी में निम्नांकित भावों का चित्रण मिलता है। (1) संघर्ष (2) आत्मपीड़न (3) ऊब (4) अकेलापन (5) अजनबीपन (6) विसंगति

डॉ0 चन्द्रभान रावत अकहानी दर्शन का त्रि–सूत्र इस प्रकार बताते है–

1. जीवन से समपृक्तता
2. लेखक की स्वतंत्रता
3. विद्रोही भावना

शिल्प का विरोध तो है परन्तु शिल्प के प्रति उदासीनता का भख है, यह एक शिल्पहीन आन्दोलन है। पात्र प्रतीक रूप में स्थिति का संकेत देते है। कई जगह पात्रों के नाम भी नहीं होते क, ख, ग... इसमें कैंटेसी, मोनो, लीग, संस्मरण, आत्म प्रलाप, डायरी आदि विधाओं का साथ मिलता है। समसरता, नाटकीयता, आकस्मिकता का प्रभाव झलकता है। अकहानी अपनी सीमाओं के कारण अपनी पहचान बनाने की प्रक्रिया में ही स्थगित होने के पहले ही चूं–चूं का मुरब्बा बनकर रह गई। इसके ध्वन वाहक कहानीकार, जो अनचाहे अधूरे मन से आए थे, स्थितियों क वास्तविकता समझकर अलग हो गए।

इससे रचनात्मक प्रवृतियों के स्थान पर गुटबंदी ज्यादा थी। पुरानी मूल्य व्यवस्था के प्रति नफरत और गुस्से का भाव ही अभिव्यक्त हुआ। पुरानी पीढ़ी बूढे माँ–बाप के प्रति काफी आक्रोश था। रक्तपात (दूधनाथ सिंह), सुखांत (दूधनाथ सिंह), रात (कृष्ण बलदेव वेद), मुक्ति (विजय मोहन) कहानियों में मां–वात्सल्य व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति नहीं रहकर नफरत की दुनिया सिरजती है। ज्ञान रंजन की पिता, गंगा प्रसाद विमल की शीर्षकहीन, मेश बक्षी की पिता दर पिता में पिता और बेटे के पुराने सम्बन्ध टूटते है।

1. सचेतन कहानी आन्दोलन 1964 में आधार पत्रिका के माध्यम से महीप सिंह द्वारा शुरू किया गया। इस आन्दोलन ने जीवन के प्रति सचेतन दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। डॉ. महीप सिंह ने सचेतन दृष्टि को आधुनिकता की एक गतिशील स्थिति स्वीकार किया है, जो हमारे सक्रिय जीवन–बोध और मनुष्य को उसकी अनुभूतियों के साथ समग्र परिवेश के संदर्भ में स्वीकार करती है। यह सापेक्षता पर बल देती है। महीप सिंह कृत मुहिम, कृत उसने नहीं कहा थाश, हिमांशु जोशी कृत आदि प्रमुख कहानियाँ हैं।

2. सहज कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक अमृतराय (1968) हैं। सहज कहानी ने किसी भी प्रकार का आक्रामक रूप न रखते हुए अपने जीवन के कटु सत्य को कहानियों में व्यक्त किया। श्री अमृत राय लिखते है शजिस कहानी में सहज कथारस नहीं है वह किसी दिन लोकप्रिय नहीं हो सकती न ही साहित्य में स्थायी प्रतिष्ठा ही पा सकती है क्योंकि आदमी हर चीज से विद्रोह कर सकता है, हर चीज को छोड़ सकता है, अपने आन्तरिक स्वभाव को नहीं। उन्होंने सहज कहानी की प्रस्तावना की। उनकी चिन्ता थी कि कहानीकार सहज होकर क्यों नहीं लिखते। सारे आडम्बरों को त्याग कर सहज होकर लिखे।

1. सहज कहानी व्यवस्था और परिवेश के प्रति विरोध और क्षेम की कहानी है।
2. यह नाम हीनो, रूपहीन, आक्रोश और क्षोम को समझने, उसे रूप देने, उसके पूर्वोत्तर को एक समग्रबोध की श्रृंखला में रखकर देखने का आग्रह करती है।
3. यह सेक्स के दुरूपयोग और उसकी असामान्य स्थितियों के चित्रण का विरोध करती है।
4. शिल्प के स्तर पर भी सहजता की मांग करती है–

समानांतर कहानी 1974 में कमलेश्वर जी ने सारिका पत्रिका के माध्यम से आरंभ की। समानांतर कहानी के प्रमुख कहानीकार कमलेश्वर, मधुकर सिंह, काशीनाथ, निरुपमा सोबती, आशीष सिन्हा, जितेन्द्र भारती, सतीश जमाली, मृदुला गर्ग आदि हैं। समानांतर कहानी ने व्यक्ति को इस अपमानबोध से मुक्त करना, सामान्य जन के संघर्ष, राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध आदमी को दुविधारहित करने की भूमिका को स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व की शर्त बनाया है। कमलेश्वर जी लिखते हैं, ष्इतिहास जब नग्न होता है तो संपूर्ण संघर्ष के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता।"[3] एक तरह से समानांतर कहानी मनुष्य के भीतर जमे मैल को माँजने की कोशिश करती है।

3. सक्रिय कहानी की शुरुआत 1973 में राकेश वल्स ने मंत्र पत्रिका के माध्यम से जनता को वर्तमान परिस्थितियों से अवगत कराने की कोशिश की। सक्रिय कहानी बदली हुई जीवन स्थिति और समकालीन मानसिकता में सही और गलत की पहचान के लिए सोच का रास्ता खोलना तथा प्रबुद्ध पाठक वर्ग के सामने चयन, स्वीकार और अस्वीकार का एक साफ और ईमानदार अवसर प्रस्तुत करना ही इसका मिशन है। "वे रचनाकार में उन मुल्यो को मौजूदगी चाहती हैं, जो उसे व्यक्तिगत तौर पर भी जुझारू बना सकें।"[4]

4. जनवादी कहानी एक व्यक्ति और एक पत्रिका पर केंद्रित नहीं रही। सातवें–आठवें दशक में मार्कंडेय, संजीव, असगर वजाहत, सूरज पालीवाल जैसे कई कहानीकारों का तेवर जनवादी रहा है। जनवादी कहानी व्यवस्था–विरोध के बिंदु पर सक्रिय कहानी के काफ़ी निकट है। मुख्यतः यह आर्थिक और सामाजिक शोषण का विरोध करती है तथा इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्था को दोषी ठहराती है।

5. वास्तव में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जिस कहानी लेखन का कार्य शुरू हुआ था, वह शताब्दी के अंत तक आते–आते पूरी तरह बदल गया। कहानी आदर्श से यथार्थ की ओर आ गई। कहानी आंदोलनों की बाढ़ सी आ गई। लेकिन इन सबके बावजूद हिंदी कहानी ने शोषण, आर्थिक विषमता, मध्यवर्गीय संताप, सामाजिक मूल्यों का पतन–इन सभी विशिष्ट विशेषताओं के साथ आम जनमानस से जुड़ने का बखूबी कार्य किया। इन कहानी आंदोलनों के विषय में डॉ. राजेंद्र मिश्रा लिखते हैं। आज ष्आज कहानी मध्यवर्ग के मिजाज को व्यक्त करती है। उसकी आधुनिकता समकालीनता से जुड़ गयी है। अभिप्राय यह है कि कहानी अकेलेपन और भीड़ के बीच अलग–अलग परिदृश्यों में रखी जा सकती है जिन्हें अनेक कहानियों में देखा जा सकता है।[5]

संदर्भ सूची

1. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन
2. कहानी नयी कहानी– नामवर सिंह पृष्ठ 17
3. साक्षात्कार– सम्पादक, कमलेश्वर, अक्टूबर 1974 पृष्ठ 9
4. हिंदी कहानी– एक अंतयात्रा, डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ, पृष्ठ 76
5. कहानी– आंदोलन और प्रवृत्तियाँ, डॉ0 राजेन्द्र मिश्र पृष्ठ 179

Cite this Article-

'डॉ0 अर्चना', 'बीसवीं सदी के कहानी आन्दोलन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:04, April 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i40012
Published Date- 16 April 2025